

SHRI PRITAM BHARTWAN

Shri Pritam Bhartwan is a famous folk artist. He has been declared a state icon by the Election Department of Uttarakhand. He is an "A" Grade folk singer of All India Radio and Door Darshan. He has specialization in jagar, Panwada and other folk songs and has promoted traditional Jagar across the world. He is also known as “Jagar Samrat”.

2. Born on August 15, 1970, Shri Bhartwan learned to play Dhol-Damaun, the traditional divine instruments singing “Jagar” the traditional folk to invoke divine and gave his first stage performance at the age of 13. He has performed on over 700 stages across the world including Australia, Germany and the United States of America.

3. Shri Bhartwan has created a series of songs to bring attention to the female infanticide (Kanya Bhoorn Hatya) cause. He has also founded a cultural academy. Through his indomitable and virtues style of singing, Shri Bhartwan has challenged every economic and social barrier to its core and moved beyond boundaries. He not only popularized the folk music but also understood the values of its exhibits.

3. In 2008, Shri Bhartwan delivered a lecture on Himalyan Culture and traditional instrument folk music and ritual in Heidelberg, Germany and from 2011. He is a visiting Professor at the University of Cincinnati, Oklahoma, Oberlin, Kentucky and Illinois Universities in USA.

4. Shri Bhartwan has been continuously singing the traditional Jagars (ritual songs which are used to commemorate a specific God) and Pawada (ancient Indian stories of Uttankhandi warrior-ship, love, and battle) that is being sung exclusively in villages since 41 years. Shri Bhartwan sings Jagar and has recorded about 52 Albums and distributed them through cassettes and VCDs which have become very popular all over the world. In August 2017, Uttarakhand Govt. organised a program which was directed by Shri Bhartwan in which 1240 Uttarakhandi dhol-Damaun were played together to play different Uttarakhandi ritual taals, which was named as NAMO NAAD and it is a big record in itself.

5. Shri Bhartwan has achieved many awards in India and abroad. He has been conferred upon the degree of “Doctor of Literature” by the Uttarakhand Open University, Bhagirathi Putra Award (2002) by Garhwali Pratinidhi Sabha Punjab, Sur Samrat (2006) by Uttarakhand Hilaans Sanskritik Kala Manch Patiyala, Shri Dev Suman Samman (2008) by Shri Dev Suman Sanskriti Sahitya Avam Siksha Sansthan Dehradun, Shailvani Samman (2009) by Kotdwar, Pauri Garhwal, Distinguished Artist Award (2009) by Uttarakhand Association of North Americal, Govind Chatak Samman (2015) by Chandra Kumar Barthwal Sodh Sansthaan, the hills of Mussoorie, Green Fly Excellence Award (2017) by Green Fly Entertainment, Mumbai and Uttarakhand Vibhushan (2016) by Amar Ujala Dehradun etc.

पद्म श्री



श्री प्रीतम भरतवाण

श्री प्रीतम भरतवाण जाने-माने लोक कलाकार हैं। उत्तराखंड निर्वाचन विभाग द्वारा आपको राज्य आइकॉन घोषित किया गया है। आप ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के "ए" ग्रेड के लोक गायक हैं। आपको जागर, पनवाड़ा और अन्य लोक गीतों में महारथ हासिल है और आपने विश्व भर में पारंपरिक जागर को बढ़ावा दिया है। आपको "जागर सम्राट" के रूप में भी जाना जाता है।

2. आपका जन्म 15 अगस्त, 1970 को हुआ था। आपने देवताओं का आह्वान करने के लिए पारंपरिक लोक गीत "जागर" का गायन करते हुए पारंपरिक दिव्य वाद्य यंत्र ढोल-दमाऊं वादन की शिक्षा ली। आपने 13 साल की आयु में पहली मंच प्रस्तुति दी। आप अब तक ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी और अमेरिका सहित विश्व भर में 700 से अधिक प्रस्तुतियां दे चुके हैं।

3. श्री भरतवान ने कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए लोगों का ध्यान आकृष्ट करने हेतु अनेक गीतों की रचना की है। आपने अपनी अद्वितीय एवं विशिष्ट गायन शैली से सांस्कृतिक अकादमी की स्थापना भी की है। आपने आर्थिक और सामाजिक बाधाओं को चुनौती दी है और इन्हें पार किया। आपने न केवल लोक संगीत को लोकप्रिय बनाया है बल्कि इसके विभिन्न रूपों के महत्व को भी समझा है।

4. वर्ष 2008 में, आपने हीडलबर्ग, जर्मनी में हिमालयन संस्कृति और पारंपरिक वाद्य लोक संगीत और अनुष्ठान पर एक व्याख्यान दिया। आप वर्ष 2011 से अमेरिका स्थित सिनसिनाटी, ओकलाहोमा और ऑबरलिन, कंचुकी एवं इलिनोइस विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रोफेसर हैं।

5. आप अनवरत रूप से पारंपरिक जागर का गायन कर रहे हैं जिसका (धार्मिक गीत गायन विशिष्ट देवता के आह्वान के लिए किया जाता है। आप पहाड़ी गीतों उत्तराखंड के जंगीजहाज, प्रेम और संघर्ष की प्राचीन भारतीय कहानियों)का गायन भी करते आ रहे हैं। इनका गायन आमतौर पर 41 वर्षों से गांवों में हो रहा है। आप जागर का गायन करते हैं और आपके लगभग 52 एलबम रिकॉर्ड हो चुके हैं जिन्हें कैसेट और वीसीडी के जरिए वितरण किया गया तथा ये सम्पूर्ण विश्व में बहुत लोकप्रिय हुए हैं। अगस्त, 2017 से उत्तराखंड सरकार ने आपके निर्देशन में एक समारोह आयोजित किया था। इस समारोह में विभिन्न उत्तराखंडी रस्म तालों का वादन करने के लिए 1240 उत्तराखंडी ढोल-दमाऊं का एक साथ वादन किया गया था। इसे **नमो नाद** का नाम दिया गया था जो अपने आप में एक बड़ा कीर्तिमान है।

6. आपको भारत और विदेशों में कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा आपको "डाक्टर ऑफ लिटरेचर", गढ़वाली प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा 2002 में भगीरथी पुत्र, उत्तराखंड पर्वतीय सांस्कृतिक कला मंच, पटियाला द्वारा 2006 में सुर सम्राट, देव सुमन संस्कृति साहित्य एवं शिक्षा संस्थान देहरादून द्वारा 2008 में श्री देव सुमन सम्मान, कोटद्वार पौड़ी गढ़वाल द्वारा 2009 में शैलवाणी सम्मान, उत्तराखंड एसोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरीकल द्वारा 2009 में विशिष्ट कलाकार पुरस्कार, चंद्र कुमार बरथवाल शोध संस्थान, द हिल्स ऑफ मसूरी द्वारा 2015 मे गोविंद चातक सम्मान और ग्रीन फ्लाई एंटरटेनमेंट, मुंबई द्वारा 2017 में ग्रीन फ्लाई एक्सीलेंस अवार्ड, तथा अमर उजाला देहरादून द्वारा 2016 में उत्तराखंड विभूषण से आपको सम्मानित किया जा चुका है।